कार्यात्मक वित्त (Functional Finance)

कार्यात्मक वित्त शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम अमेरिकी अर्थशास्त्री ***प्रो0 लर्नर*** ने किया था।

परन्तु वित्त को कार्यात्मक बनाने का श्रेय **कीन्स** को जाता है। कीन्स द्वारा वित्त का उपयोग मन्दी एवं बेरोजगारी को दूर करने के लिये किया गया। जिन सामान्य उपकरणों की कीन्स ने चर्चा की, कार्यात्मक वित्त के अन्तर्गत सम्मिलित किया जाता है।

कार्यात्मक वित्त का अर्थ

कर सार्वजनिक ऋण सार्वजनिक व्यय आधुनिक अर्थशास्त्री के मतानुसार करारोपण का उद्देश्य आर्थिक असमानताओं को कम करना एवं आर्थिक क्रियाओं का नियमन करना है।

लार्ड कीन्स (Lord Keynes) पहले अर्थशास्त्री थे जिन्होने इस बात पर जोर दिया कि राजस्व की नीतियों द्वारा आर्थिक क्रियाओं को प्रभावित किया जा सकता है।

कीन्स के पश्चात् प्रो0 लर्नर (Prof. Lerner) ने इस विचार को एक आधुनिक रूप प्रदान किया।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

प्रो0 लर्नर का कहना है जिस ढंग से सार्वजनिक वित्तीय उपाय समाज में कार्य करते है उसे कार्यात्मक वित्त कहते हे। उनका मानना है कि राजकोषीय कार्यवाहियों की जाँच केवल उनके प्रभावों द्वारा ही की जानी चाहिये।

अर्थशास्त्र के सभी विषयों एवं कक्षाओं के नोट्स, प्रश्नोत्तर, सैंपल पेपर, वस्तुनिष्ठ प्रश्न, विगत वर्षों के प्रश्नपत्र, अभ्यास प्रश्नपत्र (हिंदी या अंग्रेजी माध्यम) के PDF आपको www.theeconomicsguru.com पर मिल जायेंगे।

इसके साथ ही सभी हिंदी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम के छात्रों के लिए Free **LIVE CLASS** भी उपलब्ध है, हमारे **YOUTUBE CHANNEL "THE ECONOMICS GURU"** पर । अभी **subscribe** कर लीजिये और ज्यदा से ज्यादा **शेयर** कर दीजिये अपने दोस्तों के बीच।

किसी भी प्रकार की समस्या के लिए आप हमसे सम्पर्क कर सकते है, YOUTUBE के कमेंट बॉक्स में कमेन्ट करें या वेबसाइट के Email वाले Option में जाकर **Email** करे या WhatsApp कर सकते है Website में लिंक दिया गया है।

धन्यवाद

नकुल ढाली

The Economics Guru

लाभार्थी बोर्ड:

CBSE, UK Board, UP Board, Bihar Board, MP Board, CG Board, Rajasthan Board, Haryana Board

साथ ही **BA; B.COM; MA** के सभी SEMESTER लिए भी अध्ययन सामग्री उपलब्ध है।

अभी VISIT करें www.theeconomicsguru.com

Subscribe my **YOUTUBE** channel **THE ECONOMICS GURU**

Follow me:

Facebook- *Nakul Dhali*

Instagram- *@nakuldhali*

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

जिस विधि के द्वारा अर्थव्यवस्था में राजकोषीय कार्यवाहियाँ क्रियाशील रहती है उसी को प्रो0 लर्नर ने कार्यात्मक वित्त का नाम दिया।

आज राज्य के सामने अनेक उद्देश्य है जैसे - बेरोजगारी दूर करना, सार्वजनिक कल्याण की योजनाएँ बनाना, उन पर व्यय करना, यातायात के साधनो का विकास करना, निजी उद्योग एवं सार्वजनिक उद्योगो में गति प्रदान करना, वितरण की असमानता को मिटाना आदि।

इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिये लोक वित्त की सहायता ली जाती है। जिन साधनों का प्रयोग इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिये किया जाता है, वे कार्यात्मक वित्त के अन्तर्गत आते है।

कार्यात्मक वित्त के अर्थ को इन बातो से स्पष्ट किया जा सकता है।

1. कर (tax)- कार्यात्मक वित्त के अन्तर्गत करों को लगाने का मुख्य उद्देश्य आय प्राप्त करना नही है, बल्कि कुछ सामाजिक उद्देश्यों की पूर्ति भी करना है। करारोपण के द्वारा आय की असामनता को दूर किया जा सकता है। जब मुद्रास्फीति की स्थिति हो तो, कर लगाकर अतिरिक्त क्रयशक्ति में कमी आ सकती है। इससे सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था प्रभावित होती है। कार्यात्मक वित्त के कारण ही करारोपण अर्थव्यवस्था में सक्रिय भूमिका निभा रहा है।

2. ऋण (public debt)- कार्यात्मक वित्त यह भी स्पष्ट करता है कि ऋण से अर्थव्यवस्था पर बुरा प्रभाव नही पड़ना चाहिए। साथ ही यह भी बताता है कि ऋण का उपयोग कब और कैसे किया जाए।

3. सार्वजनिक व्यय (public expenditure)- यदि लोक व्यय से अर्थव्यवस्था पर अनुकूल प्रभाव पड़ रहे हो तो सार्वजनिक व्यय होने चाहिये, अन्यथा नही। कार्यात्मक वित्त की सहायता से सार्वजनिक व्ययों को उपयोगी बनाया जा सकता है। अर्थात् उत्पादन, उपभोग, रोजगार, राष्ट्रीय आय में वृद्धि संभव है तो सार्वजनिक व्यय आर्थिक विकास को

चरम सीमा तक पहुँचा सकता है।

कार्यात्मक वित्त के दो नियम

कार्यात्मक वित्त और संघीय ऋण लेख के भीतर, लर्नर कार्यात्मक वित्त के दो कानूनों का वर्णन करता है।

1. सरकार की पहली जिम्मेदारी करों या खर्चों के साथ कुल मांग को समायोजित करना है ताकि अर्थव्यवस्था मुद्रास्फीति के दबाव के बिना संभावित रूप से चल सके।
2. सरकार को केवल ऋण जारी करना चाहिए यदि गैर-सरकारी क्षेत्र के भीतर धन और सरकारी ऋण होल्डिंग्स के बीच मिश्रण को बदलना वांछनीय है। यह ब्याज दरों को समायोजित करने के लिए किया जाता है।

कार्यात्मक वित्त इस विचार पर आधारित है कि बजट स्थिरता (budget stability) के साथ पूर्ण रोजगार की स्थिति को प्राप्त करने तथा बनाये रखने का एक महत्वपूर्ण अस्त्र है।

इस विचार के अनुसार लोक वित्त मुद्रा स्फीति (inflation)तथा मुद्रा अवस्फीति (deflation) के मूल कारण को दूर करता है जिससे आर्थिक स्थिरता (economic stability) कायम रहती है।

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

कार्यात्मक वित्त के उद्देश्य

1. रोजगार में वृद्धि :- देश के लिये बेरोजगारी एक अभिशाप होती है। रोजगार स्तर में वृद्धि करने के लिए कार्यात्मक वित्त की सहायता ली

जाती है।

2. आय स्तर में वृद्धि :- रोजगार से तो आय प्राप्त होती है परन्तु रोजगार में लगा व्यक्ति भी कुछ समय के बाद अपनी आय में वृद्धि करने में चेष्टा करता है। अत: सरकार बजटो में परिवर्तन करके आय स्तर को प्रभावित करती है।

3. आर्थिक विकास :- आर्थिक विकास में सार्वजनिक व्यय, आय तथा ऋण का महत्वपूर्ण योगदान हैं। कार्यात्मक वित्त के द्वारा आर्थिक विकास को प्रोत्साहित किया जा सकता है।

4. बचत में वृद्धि :- आर्थिक विकास के माध्यम से आय स्तर में वृद्धि करके बचतों को बढ़ाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त करारोपण से उपभोग में कमी करके भी बचते बढ़ायी जा सकती है।

5. व्यापार चक्रो पर रोक :- पूंजीवादी व्यवस्था में व्यापार चक्रों की पुनरावृत्ति होती है। व्यापारिक तेजी व मन्दी के समय सार्वजनिक व्यय में परिवर्तन करके व्यापार चक्रों में रोक लगायी जा सकती है।

अर्थशास्त्र के सभी विषयों एवं कक्षाओं के नोट्स, प्रश्नोत्तर, सैंपल पेपर, वस्तुनिष्ठ प्रश्न, विगत वर्षों के प्रश्नपत्र, अभ्यास प्रश्नपत्र (हिंदी या अंग्रेजी माध्यम) के PDF आपको www.theeconomicsguru.com पर मिल जायेंगे।

EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

इसके साथ ही सभी हिंदी माध्यम तथा अंग्रेजी माध्यम के छात्रों के लिए Free **LIVE CLASS** भी उपलब्ध है, हमारे **YOUTUBE CHANNEL "THE ECONOMICS GURU"** पर । अभी **subscribe** कर लीजिये और ज्यदा से ज्यादा **शेयर** कर दीजिये अपने दोस्तों के बीच।

किसी भी प्रकार की समस्या के लिए आप हमसे सम्पर्क कर सकते है, YOUTUBE के कमेंट बॉक्स में कमेन्ट करें या वेबसाइट के Email वाले Option में जाकर **Email** करे या WhatsApp कर सकते है Website में लिंक दिया गया है।

धन्यवाद

नकुल ढाली
The Economics Guru

लाभार्थी बोर्ड:

CBSE, UK Board, UP Board, Bihar Board, MP Board, CG Board, Rajasthan Board, Haryana Board

साथ ही **BA; B.COM; MA** के सभी SEMESTER लिए भी अध्ययन सामग्री उपलब्ध है।

अभी VISIT करें www.theeconomicsguru.com

Subscribe my **YOUTUBE** channel **THE ECONOMICS GURU**

Follow me:

Facebook- *Nakul Dhali*
Instagram- *@dhali_sir*

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE